सत्यपाल श्रीवत्स

(12 जून, 1932 - सुराड़ी, कठुआ)

दो सायों के बीच

मैं
अपने आपको
सदा दो सायों के बीच घिरा हुआ पाता हूं,
अपना साया
मौत का साया ।
मैं नाज करता हूं अपने साये पर
कि यह मेरा हमेशा साथ देता रहेगा,
क्यों कि ...
अपने आगे-पीछे,
ऊपर-नीचे,
दुख में, सुख में
मैं निरन्तर इसी से घिरा रहता हूं ।
पर
फिर भी
न जाने क्यों फिर भी प्रतीत होता है कभी -कभी
कि -
सब से अधिक खतरा मुझे इसी से है ।
क्यों कि
लगता है कि यह एक दिन मेरा साथ छोड़ देगा !
जबकि
मौत का साया
अपनी उपस्थिति
का मुझे कभी एहसास भी नहीं होने देता ।
वह पास रह कर भी

मुझसे अजनबी सा बना रहता है
सच होकर भी
झूठ सा लगता है मुझको
इसलिए
मैं समझता हूं कि
उससे मुझे कोई खतरा नहीं

★ ★ ★

सम्पर्क :- सैक्टर 5, प्लाट न० 47, रूप नगर,
जम्मू - 180007